सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै

❊ पहली चेत शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल ❊

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सम्मत शहनशाही कहे मैं वेख्या खेल चौथे जुग, चौकड़ी जगत ध्यान लगाईआ। सतिजुग त्रेता दवापर कलिजुग लेखा लिआ बुज्झ, भेव अभेद बातन परदा रिहा ना राईआ। निरगुण धार मैनूं सभ कुझ गया सुज्झ, परदा उहला दिता चुकाईआ। चार वरन अठारां बरन सृष्टी दृष्टी वेखी बुध्ध, मन मत खोज खुजाईआ। तन वजूद रिहा ना लुक, माटी कच्च भरम ना कोई भुलाईआ। कोटां विच्चों अनेकां विच्चों भगत सुहेले गौंदे अगम्मी तुक, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सुहौंदा मुख, आत्म परमात्म वज्जी वधाईआ। मैं निमस्कार सजदा कीता झुक, डण्डावत विच्च सीस निवाईआ। अन्त हस्स के कहां मेरा सम्मत गया मुक, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ।

सम्मत शहनशाही चार कहे मैं वेख्या जगत जहान, जहालत दीन दुनी वेख वखाईआ। संदेसा दिता श्री भगवान, धुर करते दिता सुणाईआ। चारों कुण्ट फिरे शैतान, दह दिशा होई हलकाईआ। झगढ़ा पिआ तत्त इन्सान, मानव करे कूड़ लड़ाईआ। आत्म रिहा ना कोई ज्ञान, ब्रह्म विद्या ना कोई पढ़ाईआ। चारों कुण्ट सुंञ मसाण, सति सतिवाद सोभा कोई ना पाईआ। जोधा सूरबीर दिसे ना कोई नौजवान, मर्द मरदान अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ ।

सम्मत कहे मेरी अन्तम वार, वारता प्रभ दी दिआं जणाईआ। ख़बरदार कीते गुरू अवतार, पैगम्बरां रिहा हलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे आधार, करोड़ ततीसा आया जगाईआ। धरनी धरत धवल आलस निंदरा अंदरों उतार, सुस्ती दरुस्ती विच्च दृढ़ाईआ । हुक्म दस्स सची सरकार, कीती अगम्म पढ़ाईआ। लहणा देणा वेखो अन्त सर्ब संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ ।

चौथा जुग कहे मैं वेखी चार जुग दी धारा, धरनी धरत धवल खोज खुजाईआ। हुक्म संदेशा दिता अगम्म अपारा, अलख अगोचर रिहा जणाईआ। ख़बरदार होवो सवाधान जगत संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। उठो भज्जो नट्ठो तेई अवतारा,

मूसा ईसा मुहम्मद नाल मिलाईआ। गुर दस करो विचारा, बुद्धि तों परे ध्यान लगाईआ। जिस दे के आए लारा, नाम संदेसयां विच्च सुणाईआ। कह के आए कलकी अवतारा, निहकलंक नाउँ प्रगटाईआ। अमामां दा अमाम सिकदारा, शाहो भूप सच्चा शहनशाहीआ। निरगुण रूप होया उजिआरा, दो जहानां डगमगाईआ। लहणा देणा वेख अगम्म अपारा, अलख अगोचर खोज खुजाईआ। जिस सुहाया इक्क दवारा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी नूर अलाहीआ।

चौथा जुग कहे सारे आओ दूर दुराडे, हुक्म सुणाया धुरदरगाहीआ। जिस ने धर्म निशाने गाडे, गाईड गाड इक्को नूर अलाहीआ। सभ दे पूरे करे वाअदे, वाहवा वज्जे इक्क वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर अन्तम कलिजुग लै लउ निरगुण धार कोलों फाइदे, मुफ़ाद आपणा नाल रलाईआ। आपणे वखाओ पिछले कानूंन काइदे, काइदे आज़म मंग मंगाईआ। क्यों इक्क दूजे तों होए अलाहिदे, दीनां मज़्हबां वंड वंडाईआ। क्यों मार्ग दस्से पैंडे, रहबर राह जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

सम्मत चौथा कहे मैं संदेशा दिता दरगाह साची मुकामे हक़, हकीकत आया दृढ़ाईआ। निरगुण धार रहे ना शक़, गुर अवतार पैगम्बरां भेव खुल्हाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला प्रगट इक्को सच, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जिस ने खेल खिलौणा काया माटी कच्च, पंचम पंच फोल फुलाईआ। हुक्म संदेशा रिहा दस्स, लेखा बिन कलम शाहीआ। तक्को बिन नेत्र अक्ख, निरगुण नूर अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

चौथा सम्मत कहे गुर अवतार पैगम्बरो आ गया तुहाड्डा वक्त, सोहणा सुहञ्जणा दिआं जणाईआ। मैं सभ नूं दस्सया पहली चेत आउणा जगत, मातलोक पन्ध मुकाईआ। आपणा लेखा नाल लिऔणा फ़कत, जो फ़िकरे आए दृढ़ाईआ। नाल अहिदनामा लिऔणा जिस दे उत्ते लिखी शर्त, शरअ दिती समझाईआ। छड्ड के अगम्मी अर्श, अर्श तों फर्श सोभा पाईआ। आपणे नाम कलमे दी नाल लिऔणी फरद, भुलेखा रहे कोई ना राईआ। जो अन्त अख़ीर कीती अर्ज़, उह वी याद आया कराईआ। वेखयो किसे दा हो ना जावे हर्ज, हर्जाने सभ दे पूर कराईआ। पुरख अकाला जोधा मरद, मर्द मरदाना नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

चौथा सम्मत कहे भगतो मेरी निमस्कार, मैं अन्त अन्त सीस निवाईआ। मैं ख़बरदार कर के जगत संसार, सृष्टी दी दृष्टी आया हिलाईआ। हुक्मे अंदर कीती कार, जो करनी दे करते आपणी कार कमाईआ। सम्मत पंज विच्च सारे कर लैणे गिरफ्तार, शब्दी डोरी

तन्द बंधाईआ। मैं संदेशा दे के चल्लया ओस दरबार, जिस नूं सचखण्ड कह के सारे गाईआ। ओथों भज्जे औण गुरू अवतार, पैगम्बर सोभा पाईआ। हिसाब किताब सर्ब वखाण, की करनी कार कमाईआ। की नाम कलमा गाया गाण, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सुणाईआ। की जगत पाया घमसान, की कीती तन लड़ाईआ। की आसा रक्खी अमाम, अमलां तों रहत जणाईआ। की कलमा दस्सया कलाम, कायनात पढ़ाईआ। क्यों बरदे बणे ग़ुलाम, सजदा सीस निवाईआ। सम्मत चौथा कहे मैं दे के चल्लया इतलाहे आम, कोई बचया रहण ना पाईआ। चार कुण्ट डंके नाल सुणाया फ़रमाण, फरमांबरदारी सच कमाईआ। मेरा महिबूब होया मेहरवान, मुहब्बत विच्च सिर मेरे हत्थ टिकाईआ। हुण सम्मत पंजवां हाज़र होया अग्गे श्री भगवान, बोलण दी लोड़ रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

पहली चेत कहे मैं सम्मत पंजवां चढ़या, चढ़दा लहैन्दा देणा हिलाईआ। धुर दा हुक्म अगम्मी पढ़या, पड़दिआं अंदर दिता जणाईआ। जेहड़ा कदी किसे नाल नहीं कोई लड़िआ, कलिजुग धार विच्च उह वी देणा लड़ाईआ। जेहड़ा हँकार विच्च कदे नहीं मरया, उह वी मार के देणा वखाईआ। एह खेल मेरे प्रभू प्रभ करया, करनी दा करता दए वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

सम्मत पंजवां कहे मैं वेखां पंच परपंच, पंज भूतक खोज खुजाईआ। जगत साधना दा काया मन्दर अंदर वेखणा मंच, किस आसण डेरा लाईआ। किसे नूं हिलण नहीं देणा इंच, कदम कदम ना कोई बदलाईआ। जिहड़ा मनुआ बणाया पंच, दिवस रैण कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ।

पंचम सम्मत कहे मैं शहनशाही, पंच मिले वडयाईआ। मेरा मालक इक्क बेपरवाही, बेपरवाही विच्च समाईआ। जिस नूं कैंहदे धुरदरगाही, दरगाह साची सोभा पाईआ। उस दी शब्द गुरू करे अगवाही, दूजा नज़र कोई ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी दे के गए गवाही, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। उह मालक मेरा माही, महिबूब इक्क अखवाईआ । जिस ने कलिजुग अंदर बदल देणी कूड़ी शाही, सतिजुग साचा राह वखाईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़नीआं बाहीं, कोझयां कमलयां गले लगाईआ। चार वरन बणा के भैणां भाई, ऊँच नीच दा डेरा देणा ढाईआ। साची मंज़ल इक्क चढ़ाई, मालक इक्को देणा वखाईआ। जिथ्थे निरगुण नूर जोत रुशनाई, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। सो मन्दर सोभा पाई, जिथ्थे छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। सम्मत पंजवां कहे मेरे दिन नूं दिउ वधाई, ब्रह्मण्ड खण्ड सारे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची सच सुहाईआ।

शहनशाही सम्मत कहे मैं पंचम आया जग, जागरत जोत करां रुशनाईआ। चार

कुण्ट दह दिशा वेखां अग्ग, अगनी अग्ग तत्त तपाईआ। एह खेल सूरे सर्बग्ग, जो लोकमात दिती वरताईआ। जिस दी आर पार समझे कोई ना हद्द, हदूद नज़र कोई ना आईआ। करे खेल पुरख समरथ, महिमा अकथ्थ अकथ्थ वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वरताईआ।

सम्मत कहे चेत आया चातर, चातरको दिआं जणाईआ। प्रभ खेल करना जिस खातर, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश दिआं दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर हाज़र होए लै के पात्र, पत्रका आपणे हत्थ रखाईआ। जिन्हां नूं पुरख अकाल आया वाचण, दूजा करे ना कोई पढ़ाईआ। सारे कहण प्रभू तेरा नाम ते तेरा पाठण, तेरा इष्ट नूर अलाहीआ। असीं लोकमात सभ नूं आए आखण, दीन दुनी समझाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेशवर सभ दा बापण, एहो पिता माईआ। जिस ने कलिजुग मेटणी अन्धेरी रातण, सतिजुग साचा चन्द करे रुशनाईआ। साची मंज़ल चाढ़े घाटण, पैंडा अगम्म मुकाईआ। आत्म परमात्म जोड़े नातन, दूजा संग ना कोई रखाईआ। सच दवार वखाए आसण, सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

सम्मत कहे गुर अवतार पैगम्बर होए इक्ट्ठे, सोहणा संग बणाईआ। सभ दे कोल आपणे आपणे पटे, पटने वाले रहे वखाईआ। उंगलां नाल रहे दस्से, इशारयां विच्च जणाईआ। राम किशन नाल अल्ला ने पाए रट्टे, मन्दरां नाल मस्जिद गिरजे दिते टकराईआ। अल्ला नाल सतिनाम लाई सट्टे, ठोकर ठोकर नाल हिलाईआ। आ गया आपणे वट्टे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, भेव अभेदा इक्क खुल्हाईआ।

सम्मत कहे गुर अवतार पैगम्बर आए हज़ूर, हाज़र सीस निवाईआ। हुक्म प्रभू मंज़ूर, तेरी बेपरवाहीआ। अगला खेल दस्स ज़रूर, ज़रूरत तेरी झोली पाईआ। साडा रिहा ना माण ग़रूर, ग़ुरबत दिती गवाईआ। दीन मज़्हब दा जो पा के गए फतूर, फतवा सभ दे उत्ते नज़री आईआ। अन्तम असीं होए मज़बूर, मज़बूरी दईए दृढ़ाईआ। इस विच्च साडा नहीं कसूर, सारे तेरी चले हुक्म रजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ।

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो सारे आवो नेड़े, कंधा कंधे नाल मिलाईआ। चारों कुण्ट दे के गेड़े, दहि दिशा वेख वखाईआ। मैनूं दस्सो तुहाढ्ढे केहड़े केहड़े, इशारयां नाल वखाईआ। जिन्हां दे अंदर द्वैत वाले नहीं झेड़े, उह बांह लउ उठाईआ। जेहड़े चढ़े मेरे बेड़े, ओन्हां नाल लउ मिलाईआ। जेहड़े वसे तुहाढ्ढे खेड़े, ओन्हां थापी दिउ लगाईआ। जेहड़े तुहाढ्ढे नाल करदे हेरे फेरे, ओन्हां नूं राए धर्म दा दवारा आपे दिउ वखाईआ। क्यों तुसीं ओन्हां दे गुरू उह तुहाढ्ढे चेरे, तुहाढ्ढे कोलों दवौणी सज़ाईआ। तुहाढ्ढे मैं करां नबेड़े, तुहाढ्ढे मुरीदां दे नबेड़े तुहाढ्ढे हत्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ।

गुर अवतार पैगम्बरो तक्को चार कुण्ट, दह दिशा ध्यान लगाईआ। केहड़े बैठे विच्च बैकुण्ठ, कवण बहिश्तां डेरा लाईआ। मुहम्मदा वेख जिन्हां कराई सुन्नत, क्यों ना सति विच्च समाईआ। ईसा की कीती ओनत, मैनूं दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेशा इक्क सुणाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण प्रभू थोड़ा दे दे वक्त, छिन्न मातर मंग मंगाईआ। सानूं वेख लैण दे जगत, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। की लेखा बूंद रकत, तन वजूद की वडयाईआ। की लहणा नार मरद, स्त्री पुरुष की खेल खलाईआ। किथ्थे सच प्रेम दी दर्द, बिरहों विछोड़ा किस सताईआ। कवण करे प्रेम दी अर्ज़, बेनन्ती सच जणाईआ। केहड़ा पूरा करे फर्ज़, हुक्म मन्न के सीस निवाईआ। केहड़ी साची गर्ज़, कवण मिले वडयाईआ। जां तक्कया खेल दीन दुनी दा सारे होए असचरज, हैरानी विच्च दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ।

पुरख अकाल कहे तुहाड्डा वक्त हो गया पूरा, पूरी तरा दिउ जणाईआ। कवण मूरख कवण मूढ़ा, कवण तुहानूं चाढ़ के रंग गूढ़ा, मेरे विच्च समाईआ। कवण ला के मस्तक धूढ़ा, टिक्के रिहा रमाईआ। किस दे अंदर जोती नूरा, कवण करे रुशनाईआ। कवण सुणे अनादी तूरा, कवण तुरीआ तों परे मेरा दर्शन पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो आपणा बचन करो पूरा, पारब्रह्म ब्रह्म इक्को हुक्म सुणाईआ। कलिजुग अन्त पुरख अकाल हो गया मज़बूरा, मज़बूरी विच्च सभ नूं रिहा बुलाईआ। दीनां मज़्हबां अंदर कलिजुग कूड़ी क्रिया ने ऐसा खिलारया कूड़ा, हर हिरदिउँ करे ना कोई सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, इक्को हुक्म सुणाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण प्रभू सानूं मार लैण दे इक्को झाकी, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल किहा आपणी खाणी बाणी दी वेखो खोल्ह के ताकी, झरोखे विच्चों नैण उठाईआ। तुहाड्डा केहड़ा नाम केहड़ा कलमा बणया साकी, साख्यात दिउ दृढ़ाईआ। क्यों तुहाड्डे हुन्दआं तत्त विच्च रहण वाला मनूआं होया आकी, गुर अवतार पैगम्बरो तुहाड्डी की वडयाईआ। तुसीं मेरे दास दासी, सेवक सेवा विच्च लगाईआ। मैं साहिब पुरख अबिनाशी, आदि जुगादि दा करता इक्क अखवाईआ। क्यों कलिजुग होई अन्धेरी राती, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। दीन दुनियां दी तुसीं बदल ना सके हयाती, जीवण विच्च जीवण ना कोई रखाईआ। किधर तुहाड्डा नूर किधर जोत दा दीवा बाती, क्यों ना काया मन्दर अंदर होए रुशनाईआ। केहड़ा कर्म कांड दा लेखा बाकी, मैनूं दिउ समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दा मालक ख़लक दा ख़ालक इक्को हुक्म सुणाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण तक्कीए आपो आपणे मज़्हब, दीन दुनी ध्यान लगाईआ।

तेरा रिहा कोई ना अदब, दुनियां काया आदत बैठी बदलाईआ। जिंनां चिर तूं ना करें मदद, मुद्दा हत्थ किसे कुछ ना आईआ। जिध्धर वेखीए चारों कुण्ट तशद्द, सांतक सति ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण प्रभू साथों मंगे ना कोई हिसाब, लहणा दे कोई ना पाईआ । तेरा नाम ते तेरी किताब, तेरे कलमे आए गाईआ। साडे कोल एहो जवाब, जो सानूं दिती सुग़ात, परत के तेरे विच्च टिकाईआ। तेरी सृष्टी तेरी दृष्टी तेरी दुनियां कायनात, लक्ख चुरासी तेरी सोभा पाईआ। असीं तां दीनां मज़्बां दी निक्की निक्की जमात, अक्खरां विच्च कर के आए पढ़ाईआ। तेरी सेवा कीती खिदमात, ख़ादम हो के आपणा सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ।

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो आ जाओ सचखण्ड वाले रस्ते, सच दुआर दिआं जणाईआ। चार जुग दे बंन्ह के बस्ते, दरगाह साची दिउ टिकाईआ। तुसीं सदा मेरे घर विच्च रहणा वसदे, लोकमात दा खैहड़ा दिता छुडाईआ। ढोले गाउणे मेरे जस दे, सिफ्तां विच्च सालाहीआ। इशारे लैणे अगम्मी अक्ख दे, बिना तन वजूद तों दिआं दृढ़ाईआ। जेहड़े कलमे आए रटदे, ओन्हां दे रट्टे तुहान्हूं दिते वखाईआ। जेहड़े वणजारे बणे नहीं सचे हट्ट दे, लोकमात आपणी कार कमाईआ। ओथों एस वेले कलिजुग जीव नफा नहीं खट्टदे, आत्म परमात्म रंग ना कोई रंगाईआ। अंमिउँ रस मूल ना चट्टदे, दुरमत मैल ना कोई धवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण साडे मालक धुर खुदा, तेरी इक्क सरनाईआ। साडी कबूल कर दुआ, रहमत विच्च सरनाईआ। दर ठांडे गए आ, पुज्जे चाईं चाईंआ। पिछला लेखा दे मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। अग्गे तेरा इक्को जपीए नां, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। ना कोई सूर खाए ना गाँ, चहुंपाइआं उत्ते मज़्ब ना वंड वंडाईआ। तूं सभ दा पिता मां, सृष्टी बणा दे भैण भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ।

गुर अवतार पैगम्बरो तुहाड्डी वेखी बड़ी अबादी, इबादत वाले खोज खुजाईआ। आत्म परमात्म करे कोई ना शादी, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोई मिलाईआ। तुहाड्डा हुक्म सुणे ना कोई अहिलादी, ऐलान सारे आए कराईआ। प्रेम समझे ना कोई हकीकी मज़ाज़ी, मज़ा रस रसना वेख वखाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। सदी चौधवीं इक्क वेरां ज़रूर करनी पए बरबादी, बावा आदम माई हव्वा दए गवाहीआ। एह खेल जुग जुगादी मेरी सादी, सैहज सुभाउ देणी वरताईआ। तुसां हुक्म अंदर रहणा

राज़ी, राज़क रिज़क रहीम रिहा दृढ़ाईआ। अग्गे तों शरअ दा रहण देणा नहीं कोई काज़ी, कज़ा सभ दे उप्पर रखवाईआ। ना कोई सजदा करे निमाज़ी, नमस्ते इक्को देणी समझाईआ। पिछला झगढ़ा छड्डणा माज़ी, पास्ट नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेश इक्क सुणाईआ।

पुरख अकाल कहे मैं सभ दा लेख मुकावांगा। कलिजुग कूड़ी क्रिया भेख मिटावांगा। शब्द अगम्मी संदेश, दो जहानां इक्क सुणावांगा। मालक बण अगम्म नरेश, नव नौ चार खोज खुजावांगा। कागज़ कलम शाही लिखे वेखां लेख, अलख अगोचर हो के परदा आप उठावांगा। जिस नूं सारे कहण प्रदेश, सो देस आप सुहावांगा। कलिजुग मिटे कूड़ मलेछ, मसला सभ दा हल्ल करावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता इक्को हुक्म वरतावांगा।

गुर अवतार पैगम्बरो सुणो अगम्मी राज़, रहमत विच्च जणाईआ। भेव खोल्हांगा राज़, परदा दिआं उठाईआ। जो पिच्छे साजण लिआ साज, सो सच दिआं बदलाईआ। चार वरनां दा इक्क समाज, बरन अठारां रंग रंगाईआ। किसे पढ़नी ना पए निमाज़, रोज़ा रक्ख ना झट्ट लंघाईआ। टल खड़काउँणा ना पए उच्ची अवाज़, मन्दरां विच्च दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ।

भेव अभेदा खोल्हां इक्क, एका एक दिआं जणाईआ। आत्म परमात्म ला के सिक, सिखर चोटी दिआं चढ्हाईआ। जन्म मरन दी मेट के तृख, तृष्ना दिआं मिटाईआ। सुरती शब्द गुर चेला बणे सिख, साचा रंग रंगाईआ। पूजणा पए ना पत्थर इट्ट, काग़ज़ां सीस ना कोई निवाईआ। सभ दा लहणा देणा लवां नजिठ, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। परदा लाह के सवा गिट्ठ, अन्तर नूर जोत करां रुशनाईआ। धुर दा हुक्म कदे ना सके मिट, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। किसे नूं ख़ाक पाउणी पए ना विच्च लिट, जटा जूट ना राह चलाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरसती लैणी पए ना छिट, जलधारा ना कोई वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ।

साचा रंग रंगा आप, आपणी दया कमाईआ। सतिजुग सभ दा सांझा कर के जाप, जीवण जुगत दिआं जणाईआ। त्रैगुण माया मेट के ताप, अगनी तत्त बुझाईआ। जन्म कर्म दा रहे कोई ना पाप, दुरमत मैल आप धवाईआ। प्रगट हो के दर्शन देवां साख्यात, स्वछ सरूपी सोभा पाईआ। रूह बुत्त करां पाक, पतित पुनीत आपणी कार कमाईआ। लेखे लावां काया माटी ख़ाक, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। बजर कपाटी खोल्ह के ताक, ईड़ा पिंगल सुखमन डेरा ढाहीआ। तुहाड्डा सभ दा पूर कर के वाक, भविख्त दी भाखिआ पूर कराईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुसां सारयां रहणा नाल इतफाक, दीन दुनी दा झगढ़ा कोई ना पाईआ। सारयां दे देणे मैनूं तलाक, लेखा लिखणा बिन कलम शाहीआ। तुहाड्डा

लहणा होए बेबाक, बाकी रहण कुछ ना पाईआ। जो कुछ करे करावे प्रभ आप, करावणहार आप अखवाईआ। जिस नूं तुसां सारयां मन्नया बाप, पुरख अकाल वड्डी वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

पुरख अकाल कहे मेरा हुक्म अगम्म अपारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलिजुग मेट कूड़ कुड़िआरा, चारों कुण्ट करां रुशनाईआ। सतिजुग सच कर उजिआरा, नौ सत्त करां रुशनाईआ। एका शब्द इक्क जैकारा, इक्को ढोला गीत सुणाईआ। इक्को मन्दर गुरूदवारा, शिवदुआला मठ्ठ इक्क समझाईआ। इक्को प्रेम प्यार अंदर होवे सभ दा नाअरा, नर नरायण नज़री आईआ। इक्को इष्ट इक्को दृष्ट होवे निमस्कारा, सजदा सीस इक्क झुकाईआ। तुसीं दस्सो तेई अवतारा, की आसा होर वधाईआ। बोलो ईसा मूसा मुहम्मद नाल प्यारा, पारब्रह्म पतिपरमेशवर रिहा दृढ़ाईआ। दस गुरू तुहाढ्ढी की विचारा, नानक गोबिन्द दिउ जणाईआ। सारे निउँ के करन निमस्कारा, सजदा सीस झुकाईआ। तेरा हुक्म सची सरकारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। असीं लोकमात विच्च आउणा नहीं चौहन्दे दोबारा, तत्तां वाला शरीर ना कोई हंढाईआ। असीं वेखणा चौहन्दे तेरे शब्द गुरू दा नज़ारा, जो नज़रीआ सभ दा दए बदलाईआ। तूं आदि अन्त दा इक्क अवतारा, पारब्रह्म प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। तेरा खेल सदा जुग चारा, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। तेरा लेखा काग़ज़ कलम ना लिखणहारा, शाही शहनशाह तेरी सिफ्त ना कोई सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साची कार कमाईआ।

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो तुसीं सारे मेरी कुल, कुल्लआलम मेरा रूप नज़री आईआ। मेरा नाम सदा अनमुल्ल, कीमत करता ना कोई रखाईआ। ध्यान मारो तुहानूं सृष्टी गई भुल्ल, भुल्लयां राह ना कोई समझाईआ। धर्म नीतीआं गईआं रुल, धीरज धीर ना कोई धराईआ। सच दा दीवा होया गुल, गुलशन हक़ ना कोई महकाईआ। गुंचा खिड़िआ ना कोई फुल्ल, फुलवाड़ी महक ना कोई महकाईआ। तुहाढ्ढे तुलिआ ना कोई तुल, कंडे तराज़ू आपणे नाल लउ रखाईआ। सभ दा अमृत आत्म गया डुल्ल, निझर झिरना रस ना कोई झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण प्रभू साडा पूरा होया वाअदा, वाअदे खलाफ़ ना कोई खुदाईआ। तेरा शब्दी धार मुआहिदा, निरगुण निराकार वेख वखाईआ। असीं मातलोक नालों होणा चौहन्दे अलाहिदा, इक्को तेरे विच्च समाईआ। सानूं अज्ज हुक्म दे दे बकाइदा, धुर फ़रमाणा इक्क जणाईआ। असीं दीन दुनी दा लै के वेख्या जाइज़ा, साड्डी चले ना कोई रजाईआ। बिना भय तों रहण दा नहीं कोई फाइदा, सच दईए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो वेखो जूह जंगल, टिल्ले परबत खोज खुजाईआ।

मन्दर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरूदवार तक्को मंगल, राग नाद ढोले कवण सुणाईआ। चार कुण्ट दह दिशा देखो आपणी शरअ दे संगल, सगल सृष्ट दिती बंधाईआ। साची मंज़ल मूल ना लँघण, दरगाह साची मिलण कोई ना आईआ। तन वज़ूद साची रंगण, माटी ख़ाक ना कोई वडयाईआ। सभ दा मानस जन्म दिसे भंगण, भाण्डा भरम ना कोई भन्नाईआ। निम वासना महक दिसे ना कोई चन्दन, कूड़ी क्रिया ना कोई तजाईआ। आत्म मिले ना सच्चा अनन्दन, परमानंद ना कोई समाईआ। किथ्थे गई डण्डावत बन्दन, सजदयां विच्च सीस झुकाईआ। फिरी दरोही विच्च वरभंडण, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। तुसीं आत्म लिव टुट्टी क्यों नहीं गए गंढण, नाता मेरे नाल जुड़ाईआ। क्यों हुक्म अदूली कीती क्यों मरयादा कीती उलँघण, मैनूं दिउ समझाईआ। क्यों ढोला भुल्लया तुहाड्डा छन्दन, क्यों कलमे वाले कलमे गए तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण सुण पुरख अबिनाशी, सच दईए दृढ़ाईआ। साडी मन्ने कोई ना आखी, आख़र मिलण कोई ना पाईआ। आत्म धार रिहा कोई ना साथी, परमात्म वज्जे ना कोई वधाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी राती, नूरी चन्द ना कोई चमकाईआ। धर्म दा रिहा ना कोई जमाती, हकीकत वाली ना कोई पढ़ाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया विके हाटी, कीमत आपणी गए गवाईआ। जोत जगी ना किसे ललाटी, निरगुण नूर ना कोई रुशनाईआ। अमृत रस रिहा कोई ना चाटी, चेटक कूड़ होया हलकाईआ। बूंद मिले ना कोई सवांती, अगनी तत्त ना कोई बुझाईआ। शब्द सुणे ना कोई नादी, अनहद धुन ना कोई शनवाईआ। भेव खुल्हे ना कोई ब्रह्मादी, ब्रह्मांड परदा ना कोई उठाईआ। किसे ने सूर गाँ खाधी ढांडी, सारे तैनूं गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ।

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो सभ दे फोल के दस्सो इरादे, इरद गिर्द ध्यान लगाईआ। तुहाड्डे मुरीदां तुहाड्डे सिखां तुहाड्डे शिशां क्यों पशू परिंदे खाधे, की तुसीं आए समझाईआ। तुहाड्डे शब्द कलमे नाल क्यों ना जागे, पढ़न वालिआं अंदर सुरत ना कोई खुल्हाईआ। दीन मज़्हब जेहड़े तुसां साजणा साजे, क्यों ना सज्जण हो के तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

गुर अवतार पैगम्बरो हां करो जां नांह, इक्को वार जणाईआ। तुसीं सच दस्सो जिन्हां सूर खाधा जां गाँ, डंगराँ रस बणाईआ। की ओन्हां नूं मेरी दरगाह दिउगे थां, मैनूं दिउ समझाईआ। जे पशू पंछी खाणा नहीं गुनाह, गुनाह गवर मनाईआ। किथ्थों दिओगे पनाह, पुशत हत्थ टिकाईआ। नेत्र खोल्ह के दिउ वखा, इशारे नाल समझाईआ। तुसीं खुद क्यों नहीं सी लिआ खा, खा के दिता वखाईआ। क्यों मेरा कलमा आए गा, गाड कह के सीस निवाईआ। करदे आए दुआ, वास्तो धुर दे अग्गे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण प्रभू जे असीं नहीं तेरा शब्द करे तस्दीक, शहादत इक्क भुगताईआ। असीं किसे नूं आखिआ नहीं एह अगम्मी रीत, धुर मालक दिती दृढ़ाईआ। सिरफ़ तेरे नाम दी दस्सी तौफीक, सिफ्तां विच्च सालाहीआ। हर घट दिसिआ नज़दीक, गहृ गृह डेरा लाईआ। मन्दर सदा वसनीक, साढे तिन्न हत्थ सोभा पाईआ। सभ दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, जो हिरदे हरि धिआईआ। तेरा राज़ नहीं रक्खया पोशीद, जो समझाया सो आए समझाईआ। तेरी दुनियां तेरे हुक्मे अंदर बदली आपणी नीत, साड्डी रही ना कोई वडयाईआ। असीं सारे कैंहदे साड्डी पहली उत्ते मार दे लीक, अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। सभ नूं सांझी दस्स प्रीत, प्रीतम आपणा मेल मिलाईआ। तेरा मन्दर तेरा काअबा तेरा शिवदुआला मठ्ठ मन्दर मसीत, गुरूदवार तेरा नज़री आईआ। असीं अग्गे तों दीन मज़्हब दे रहणा नहीं शरीक, शरीकत दिती गवाईआ। असीं चौहन्दे दीन दुनी दी बदल दे नीत, नीतीवान तेरी सरनाईआ। काया करदे ठांडी सीत, अगनी तत्त बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी बेपरवाहीआ।

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो खुशी नाल पउ हस्स, ताली अगम्म लगाईआ। सदी चौधवीं सभ दी होणी बस्स, बस्ते देणे बंधाईआ। इक्को वार करौणे दस्ख़त, नाम लिखौणा बिना कलम शाहीआ। चार जुग दा चलदा रिहा जो रथ, रथवाही हो के सेव कमाईआ। जो नित्त नवित्त मार्ग आए दस्स, दीन दुनी जगत समझाईआ। सो पिछला लेखा सदा सदा होणा भट्ठ, अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। दीन मज़्बां कर इक्ठ, आत्म ब्रह्म देणा दृढ़ाईआ। हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई झगढ़ा देणा छड्ड, इक्को रंग वखाईआ। हउमे हंगता कूड़ कुड़िआरा अंदरों देणा कढ्ढ, माया ममता मोह गवाईआ। पुरख अकाल दी सारे बणौणे यद, इक्को नूर जोत रुशनाईआ। पिछली रहे कोई ना हद्द, हदूद अगली देणी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण प्रभू असीं जो आखें सो लग्गे लिखण, लिख के दईए वखाईआ। पुरख अकाल किहा एह सृष्टी आदि जुगादी मिथण, बिन मेरे कम्म किसे ना आईआ। तुसीं सिक्खया आए सिक्खण, सैहज नाल दिआं समझाईआ। आपणा आपणा कढ्ढो चिट्टण, पट्टेदारी फोल फुलाईआ। जिस नाल कलिजुग अन्तम लग्गा मिटण, मिटे कूड़ लोकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दा निकले सिट्टण, दीन दुनी दा परदा देणा उठाईआ। चार कुण्ट वेखो लग्गी पिट्टण, दह दिशा पए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

धुर दा हुक्म सुण के कहे मूसा, मसल्लसल धार जणाईआ। झगढ़ा दिसे नाल रूसा, चाईना चैन कोई ना आईआ। नाता टुट्टणा पंज भूता, पंच परपंच करे लड़ाईआ। सम्मत पंज विच्च मिलणा हूटा, हुलारा पहला दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

ईसा कहे सुण मूसा अलैह अलसलाम, सैहज नाल जणाईआ। उह सुण धुर दी इक्क कलाम, मुहम्मद लए अंगढ़ाईआ। जिस दी चौधवीं सदी कहे मैं लै के औणा तुफान, तोहफा सभ नूं देणा फड़ाईआ। चार कुण्ट करना वैरान, वैरी घर घर नज़री आईआ। हुक्म देणा मेरे अमाम, जो अमलां तों रहित नूर खुदाईआ। खेल वेखणा विच्च जहान, दीन दुनी फोल फुलाईआ। मेरा साहिब होए मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। तिन्न पंज सत्त होणी कतलेआम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाईआ।

राम कृष्न दोवें करन सलाह, भारत भवन वेख वखाईआ। केहड़ा दिसे जगत मलाह, खेवट खेटा सोभा पाईआ। सिआसत सभ नूं कीता गुमराह, कवण कूड़ी क्रिया विच्च वडयाईआ। सच्चा दिसे किसे ना राह, रस्ता हक़ ना कोई रखाईआ। राम किहा उह नानक वेखो गवाह, शहादत दए भुगताईआ। कृष्न किहा गोबिन्द खण्डा रिहा चमका, पता नहीं की खेल बेपरवाहीआ। मुहम्मद कहे मेरा वक्त पहुंचिआ आ, सारे दिउ दुहाईआ। ईसा कहे मैं वी तक्कां उहो राह, जिस वेले भज्जयां राह खैहड़ा नज़र कोई ना आईआ। ईसा अलैहअलसलाम कहे उच्ची मारां धाह, तेरी तेरी तेरी इक्क दुहाईआ। सम्मत पंज कहे मैं फेर वेखां नाल चा, चाओ घनेरा मेरे अंदर आईआ। धरनी कहे मेरी कबूल होई दुआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क वरताईआ।

पुरख अकाल कहे तुसीं सारे रक्खो आस, आसावंद दिआं जणाईआ। मैं घर घर करदा फिरां तलाश, लक्ख चुरासी खोज खुजाईआ। वेखां हड्ड नाड़ी मास, तन वजूद परदा लाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप प्रधानां नूं सुल्तानां नूं ख़बरदार करना अज्ज दी रात, सोया रहण कोई ना पाईआ। नौआं खण्डां विच्च नौआं दिनां विच्च ज़रूर मारया करन इक्क झात, बिन कदमां पन्ध मुकाईआ। सभ नूं राती सुत्तयां वक्खरी वक्खरी दस्स के बात, सोए हिरदे लैणे उठाईआ। एह खेल अगम्मी राज़, जिस नूं समझ विच्च ना कोई समझाईआ। शब्दी गुरू ने करना वाअज़, कलमा आपणा इक्क सुणाईआ। इक्क दूजे नूं मार के करो राज, रईअत आपणी लउ वधाईआ। प्रभू दा खेल जगत समाज, जवाब देण कोई ना पाईआ। सीस रहे किसे ना ताज, तख्त निवासी देणे ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण की सुणे बचन अपार, अपरंपर दिते जणाईआ। हस्स के कहण तेई अवतार, साड्डी लोड़ रही ना राईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कर गुफ्तार, गुफ्त शनीद रहे सुणाईआ। साड्डा वक्त पहुंचिआ आण, वेला वक्त दए गवाहीआ। नानक गोबिन्द कहे एह खेल होणा घमसाण, घुंमणघेरी विच्च दुहाईआ। जिस नूं समझे ना कोई इन्सान, उह खेल देणा कराईआ। गढ़ तोड़ सर्ब अभिमान, धुर दा हुक्म देणा

वरताईआ। झगढ़ा मेटणा राज राजान, शाह सुलतान करन लड़ाईआ। हलूणा देणा विच्च अफगान, ईरान अरब नाल दुहाईआ। असराईल मिले शैतान, शरअ दी धार इक्क बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ।

पहली चेत कहे मैं देवां सच चेतावनी, चारों कुण्ट जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी करनी भावनी, प्रभ आसा सभ दी वेख वखाईआ। जेहड़ी बाकी रह गई राम रावनी, रावण लहणा देणा झोली पाईआ। जेहड़ी खेल खिलाई कौरव पांडव कान्हनी, कृष्ना अन्तम राह तकाईआ। जिस दी मूसा ईसा मुहम्मद दिती ज़ामनी, बीसवीं चौधवीं नाल मिलाईआ। जिस दी धार चमके दामन दामनी, गोबिन्द नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

गुर अवतार पैगम्बर सारे इक्ठे बोले, इक्को वार जणाईआ। प्रभू तेरा तोल कोई ना तोले, अनतुल तेरी वडयाईआ। जुग जुग तेरे नाम भंडारे खोल्हे, आए मात वरताईआ। दिते काया चोले, असीं आए जगत हंढाईआ। अन्तम पै के तेरे शब्द दे डोले, दर तेरे सोभा पाईआ। आदि जुगादी तेरे घर दे गोले, चाकर हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ।

पुरख अकाल कहे सुणो हुक्म अगम्म अपारा, निरगुण धार दिआं जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो नज़ारा, नज़रीआ आपणा लउ बदलाईआ। सुणो शब्द नाम जैकारा, नाद धुन अगम्म अथाहीआ। जिस दी चार जुग पाई किसे ना सारा, बेअन्त कह के शुकर मनाईआ। उह निरगुण नूर कर उजिआरा, जोती जाता डगमगाईआ। सारे कह के आए चवीआं अवतारा, कल कलकी वेस वटाईआ। जिस ने मेटणा कूड़ पसारा, सतिजुग सच देणा वखाईआ। चार वरनां दे अधारा, अठारां बरन रंग रंगाईआ। आत्म ब्रह्म दे नज़ारा, नूरे नज़र देणा वखाईआ। सति सच ला अखाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा इक्क खुल्हाईआ।

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो मार लउ झाती, झाकी इक्को वार पवाईआ। कलिजुग वेख अन्धेरी राती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। कर के खेल पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता आपणा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

चेत कहे मेरी महकी रुत्त, प्रभ रुतड़ी आप महकाईआ। भगत दुलारे उठा के सुत्त, जनणी हो के गोद टिकाईआ। भाग लगा के पंज तत्त काया बुत्त, तन वजूद कीती सफ़ाईआ। उजल कर के मुख, दिती माण वडयाईआ। जन्म मरन दा मिटिआ दुख, चुरासी गेड़ ना कोई भवाईआ। उल्टा गरभ ना होवे रुख, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। साहिब

स्वामी मालक हो के लिआ पुच्छ, अन्तरजामी हो के वेख वखाईआ। जो जुग जन्म दे गए रुड्ड, रुड्डिआं लिआ मनाईआ। सदी चौधवीं आपे तुठ, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। अमृत नाम दे के घुट्ट, जाम अगम्म दिता पिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लए उठाईआ।

चेत कहे मैं खुशीआं अंदर हस्सां, हस्स के दिआं जणाईआ। सम्मत शहनशाही पंजवां आया मसां, मस्सया रैण अन्धेरी दए गवाईआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बरां कहणा अच्छा, अच्छी तेरी बेपरवाहीआ। जिस विच्च दीन मज़्हब दा कट्टया जाणा रस्सा, रस्सी रहण कोई ना पाईआ। झगढ़ा पैणा जिनां खाधा गाँ वच्छा, सूर वाला बचया रहण कोई ना पाईआ । गुर अवतार पैगम्बरां ने किसे नूं बणौणा नहीं आपणा बच्चा, सिर आपणा हत्थ ना कोई टिकाईआ । कलिजुग कूड़ा चारों कुण्ट फिरे नस्सा, भज्जे वाहो दाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर वी कहण असीं वेखदे होड़ा उप्पर सस्सा, जो निरगुण सरगुण धार दोवें रंग वटाईआ। हाहे उत्ते टिप्पी घर दोहां दा वस्सा, आत्म परमात्म इक्को गंढ पुआईआ। विष्न ब्रह्मा शिव फिरे नस्सा, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। क्यों दीन मज़्हब दा तन्द होया कच्चा, कंचन गढ़ ना कोई सुहाईआ। हिरदे हरि का नाम किसे ना रचा, साढे तिन्न करोड़ धुन ना कोई शनवाईआ। कलिजुग जीव बप्पड़ा बप्पा, अंदरों करे ना कोई सफ़ाईआ। बिना भगतां तों रिहा कोई ना पक्का, सति विच्च ना कोई समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

चेत कहे मेरा सतिगुर शब्द आया स्वामी, सभा दे बदलाईआ। बिना तत्तां तों सभ दा अन्तरजामी, घट घट वेखे थाउँ थाईंआ। जिस दी सिफ्त चार जुग दी बाणी, महिंमा अकथ्थ दृढ़ाईआ। उह खेले खेल दो जहानी, नौजवानी वेस वटाईआ। सभ दे अन्तर मंज़ल वेखे रुहानी, सन्त फ़कीर फोल फुलाईआ। पवित्र धार दिसे ना कोई जिस्मानी, तन वजूद ना कोई वडयाईआ। मंज़ल चढ़या ना कोई प्राणी, प्रनापत मिलण कोई ना आईआ। साचा नज़र ना आवे कोई बानी, जो नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को रंग रंगाईआ। जो उपजिआ सो फानी, गुर अवतार पैगम्बर रहण कोई ना पाईआ। सभ दी जूह होए बेगानी, घर दा मालक नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी कार कमाईआ।

शब्द गुरू कहे मैं गुरू गुरू गुरदेवा, आदि अन्त अखवाईआ । कलिजुग अन्तम जन भगतां करन आया सेवा, सेवक हो के सेव कमाईआ। अमृत नाम रस दा दे के मेवा, रस इक्को इक्क चखाईआ । जिस नूं समझ ना सके जिह्वा, जिह्वा तों परे वडयाईआ। मस्तक ला के कौसतक थेवा, मनीआं मन दिता बदलाईआ। मेल मिला के अलक्ख अभेवा, परदा अंदरों दिता चुकाईआ। धाम वखा के निहचल नहिकेवा, दरगाह साची इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

शब्द गुरू कहे जन भगतो तुहाढ्ढी देण आया सफ़ाई, सफारश दी लोड़ रहे ना राईआ । सभ तों कामल मेरी गवाही, शहादत अवर ना कोई भुगताईआ। तुहानूं देवे ना कोई सज़ाई, राए धर्म तुहाढ्ढे चरन चुंम के झट्ट लंघाईआ। तुहाढ्ढी सिफ्त करे कलम सिआही, कागज़ आपणा आप भेट चढ़ाईआ। तुहाढ्ढे बिना भगवान दी हो ना सके वड्डिआई, जुग जुग रीती चली आईआ। की करे जोत अकालण आदि शक्त माई, पारब्रह्म पतिपरमेशवर सोभा किस बिध पाईआ। बिन भगतां तों प्रभ नूर जोत ना होवे रुशनाई, डगमगाहट ना कोई वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

शब्द गुरू कहे मैं देण आया शहादत, आपणा बल धराईआ। सारे कहो साड्डी बदल गई इबादत, बन्दगी इक्को सीस निवाईआ। साडे विच्च प्रभू दे प्यार दी होई मिलावट, दीन मज़्हब दी वंड रही ना राईआ। असीं बाहरों फज़ी नहीं रहणा बनावट, अंदरों इके रंग रंगाईआ। शब्द गुरू तुहाढ्ढे अंदर शब्द दी करे सख़ावत, रैहमत नाल वरताईआ । तुहाढ्ढी किसे नाम बाणी नूं देणी ना पए ज़मानत, इक्को वार फ़ैसला दिता कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

शब्द गुरू कहे तुहाढ्ढी आत्मा जिस दा परमात्मा दोहां दा सच्चा साथण, साथी इक्क अखवाईआ । जन भगतो तुसां पिछली कीती आपणे अंदरों कढ्ढुणी अमृत वेले सारयां ने कर लैणी दातन, पिछला लेखा रहे ना राईआ। तुहाढ्ढी अमानत दिती नहीं गवाचण, जो गोबिन्द प्रभ दी झोली पाईआ । सम्मत पंज कहे मैं आया उह अगम्मी चिठ्ठी वाचण, जिस नूं नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग ना सक्कया कोई समझाईआ। मैं विक्कया नहीं किसे हाटण, जगत कीमत ना कोई पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ ।

शब्द गुरू कहे तुसीं सारे हो गए प्रभ दी भेटा, बचया रहण कोई ना पाईआ। जिस दा इक्को शब्दी गोबिन्द बेटा, जन्म मरन विच्च ना आईआ। जगत किनारे दा खेवट खेटा, दो जहानां पार कराईआ। जिस दा समझे कोई ना लेखा, अक्खरां विच्च ना कोई वडयाईआ । उह वसे सचखण्ड देसा, दरगह साची सोभा पाईआ। कलिजुग अन्त बदल के आया वेसा, निरगुण आपणा नूर करे रुशनाईआ। भगत उधारना मेरा पेशा, पेशीनगोई सभ दी वेख वखाईआ। आदि जुगादि रहे हमेशा, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दी कार कमाईआ।

शब्द गुरू कहे इक्को सभ दा मीत, दूजा नज़र कदे ना आईआ। जिस ने बदल देणी रीत, रीतीवान धुरदरगाहीआ। काया करे ठंडी सीत, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ । जन भगतो जींवदयां जन्म जाणा जीत, मर के जन्म दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्मा

परमात्मा दी तुहाड्डी पक्की हो गई प्रीत, दुनियांदार अग्गे सके ना कोई तुड़ाईआ। क्यों तुहाड्डे कोल प्रभू ने कीती बख्शीश, दूजे अग्गे मंगण कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

जन भगतो की किसे कोलों मंगो, मानस सारे नज़री आईआ। इक्को प्रभू दे प्यार विच्च आपणा आप रंगो, फेर रंगण दी लोड़ रहे ना राईआ। मंज़ल इक्को लंघो, जिस दी पौड़ी दे उत्ते पौड़ा होर ना कोई वखाईआ। आपणी आत्मा नूं ओस दवारे टंगो, जिथों फड़ के बाहर ना कोई कढ्ढाईआ। वेखो दुनियांदारां कोलों कदे ना संगो, दुनियां कम्म किसे ना आईआ। तुहाड्डे कोलों कोई करौणा नहीं जंगो, तुसीं इक्क इक्क फुल्ल सुट्टो, दुनियां गोल्आं नाल करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

एह फुल्ल नहीं एह जग दी अगनी अग्ग, अग्ग सके ना कोई बुझाईआ। काअबे वालिआं भुलणे हज्ज, हज़रत देण दुहाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद सारे इक्क दूजे नूं रहे सद्द, बौहड़ी बौहड़ी कर के रहे सुणाईआ। ज़रा वेखो सम्मत पंज विच्च किस तरां झगढ़ा पैंदा उत्ते हद्द, हदूदां देण दुहाईआ। बिना भगतां तों किसे होणा नहीं गद गद, खुशी हिरदे विच्च ना कोई समाईआ। ज़रा खेल वेख्यो सारी दुनियां नालों होणा अलग्ग, वक्खरी धार इक्क वखाईआ। क्यों एह खेल सूरे सर्बग्ग, जिस दी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

फुल्ल कहण एह बरखा अमृत धार, जन भगतां दिती लगाईआ। शब्द गुरू किहा, नहीं, इस दे नाल सारी सृष्टी दा करना विहार, एह मेरी बेपरवाहीआ। क्यों शब्द दे शब्द सदा इख्त्यार, ते शब्द दा शब्द सदा मुखत्यार, शब्द दा शब्द सदा आज्ञाकार, शब्द निरगुण ते शब्द सरगुण, बिना शब्द तों मण्डल रास विच्च रंग जगत ना कोई वखाईआ। शब्द कहे मैं सतिगुरू मैं गुरदेव मैं सारी दीन दुनी दा बदमाश, बदी करन करौण वाला शब्द इक्क वखाईआ। पर एह मेरा मन दे नाल कम्म ख़ास, ते बुद्धि नाल टकराईआ। ते जिस वेले मैं आत्मा नूं देवां प्रकाश, उह मेरा मेरा नूर नूर नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर, शब्द गुरू कहे, मेरे कीते नूं नहीं सके वाच, जो अंदर सुणाया, ओन्हां ने रसना गाया, कलम शाही नाल लिखाया, लिख के सिफ्तां गए सुणाईआ। ओन्हां अक्खरां उत्ते धरवास रखाया, जिस नूं अग्ग नाल सारे देण जलाया, उह प्रभू अबिनाशी भुलाया, जो घर घर अंदर डेरा लाईआ। अल्ला वाहिगुरू राम कृष्न ओम जै जैकार कराया, जै जैकार करौण वाला नज़र कोई ना आईआ। शब्द कहे मेरा आदि अन्त किसे ना पाया, जे किसे उत्ते किरपा कीती ओन, भगवन्त नूं कन्त कैह सुणाया, नारी हो के मैं साची सेव कमाईआ। जे किसे बुत्त विच्च नूर चमकाया, ओन ओस दा मंत दृढ़ाया, अठ्ठे पहर ध्यान लगाया, साह साह रसना गाया, चरन कँवल कँवल चरन बिना चरना तों सीस निवाया,

ते शब्द गरू कहे मै किसे दा फेर वी नहीं माण वधाया, जो आया सो पार कराया, वेखो गुरू अवतार पैगम्बर किसे दे साहमणे नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

शब्द गुरू कहे मैं अंन्ना बोला, सुणन कुछ ना पाईआ। भेखाधारी वसां विच्च काया चोला, तत्तां विच्च सोभा पाईआ। जिस वेले चाहवां ओस वेले आपणी धार दा बोलां बोला, अनबोलत हो के आपणा राग सुणाईआ। जे मैं कह दिता प्रभू मौला, ते सारयां मौला मौला कह के रौला दिता पाईआ। जे मैं किहा सतिनाम, ते सति सति सारे रहे गाईआ। जे मैं किहा वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू, ते वाह वा गुरू दी सारे करन वडयाईआ। ते जे मैं कहां ओस प्रभू दा कोई नाम नहीं कोई निशान नहीं ते तुसीं किस दा गौंदे ढोला, उह फिर सारे दिआं भुलाईआ। जे मैं कहां उह तक्कड़ वाला तोला, जे मैं कहां धुरदरगाह दा दूल्ला, जे मैं कहां उहदा हुक्म होवे माअकूला, जे मैं कहां उह सारयां अंदर फल्लया फूला, फेर हत्थ जोड़ के सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

शब्द कहे मैं राम बण गया, सीता पिच्छे भज्जया वाहो दाहीआ। शब्द कहे मैं काहन बण गिआ, राधा पिच्छे बंसरी रिहा वजाईआ। शब्द कहे मैं मूसा बण गिआ, मूंह दे भार रगढ़ के नक्क दिता घसाईआ। शब्द कहे मैं ईसा बण गिआ, गल फ़ासी लई लटकाईआ । शब्द कहे मैं मुहम्मद बण गिआ, कलमयां विच्च दिती दुहाईआ। शब्द कहे मैं नानक बण गिआ, गरीबी वेस कर के धरती कदमां नाल मिणाईआ। शब्द कहे मैं गोबिन्द बण गिआ, खण्डा खड़ग चमकाईआ। शब्द कहे मैं सभ नूं छड गिआ, शब्द शब्द विच्च समाईआ। शब्द कहे मैं सभ कुछ बण गिआ, आपे पिता ते आपे माईआ। शब्द कहे मैं ताणा तण गिआ, लक्ख चुरासी नज़री आईआ। शब्द कहे मैं विष्न ब्रह्म शिव घाड़त घड़ गिआ, संसारी भण्डारी सँघारी नाउँ रखाईआ। शब्द कहे जे मैनूं तक्को ते मैं सारयां विच्च वड़ गिआ, बिना मेरे तों जींदा नज़र कोई ना आईआ। शब्द कहे मैं अंदर काया मन्दर ते सभ दी चोटी उत्ते चढ़ गिआ, सिखर बह के आपणा आसण लाईआ। शब्द कहे मैं मूरख मूड़ बण गिआ, अकल विद्या ना कोई चतराईआ। शब्द कहे मैं सभ कुछ पढ़ गिआ, मेरे पढ़ाइआं तों बिना गुर अवतार पैगम्बर किसे नूं समझ किछ ना आईआ। सो शब्द कहे मैं पहली चेत जगत जहान दे मैदान विच्च खड़ गिआ, मदद अवर ना मंग मंगाईआ। आपणे विहार अंदर सृष्टी दी दृष्टी नाल लड़ गिआ, आपणी कार अंदर इष्टी दा रूप धराईआ। ना कदे जम्मयां ते ना कदे मर गिआ, मढ़ी गोर ना कदे दबाईआ। ना हिंदू ना सिख ना ईसाई ना मुसलम ते मैं ना किसे मज़्हब नूं चंगा कर के वरजया, आओ तुहानूं सिँघासण उत्ते दिआं बैठाईआ। जदों दिल कीता ओन्नां दे हत्थां विच्च फड़ा के निक्कीआं निक्कीआं पर्चीआं, बच्चिआं वांग दिता परचाईआ। किसे नूं राम किसे नूं कृष्न किसे नूं ओम अल्ला सतिनाम दे के जगत वाला ख़रच्या, मातलोक दे राहे दिते पाईआ।

ओन आ के उत्ते धरत्या, धरनी धरत धवल दिती वडयाईआ । गुण गा के प्रीतम अरशया, सिफ्त दिती सुणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

शब्द गुरू कहे सारे कैंहदे मन्नो शास्त्र सिमरत वेद पुरान, अञ्जील कुरानां ध्यान लगाईआ। मैं हस्सदा फिरां बिना मेरी किरपा किसे नूं औणा नहीं ज्ञान, पढ़यां हत्थ कुछ ना आईआ। जिंनां चिर मैं अंदर ना वड़या मन्दर ना चढ़या ते मेरी कौण देऊ पहचान, निझ नेत्र ना कोई खुल्हाईआ। पढ़ना रसना दा गान, सुणना कन्नां दा विधान, मिलणा जिस वेले प्रभू होवे मेहरवान, बिना मेहर तों मिलण कोई ना पाईआ। ते जे कोई कहे असीं सारे इन्सान, साडे विच्च भगवान, असीं ओसे दा निशान, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म सारे नज़री आईआ । शब्द गुरू कहे फेर मैं कहां तुहाढ्ढे ब्रह्म दी किहड़ी दुकान, ते जे तुसीं ब्रह्म ते तुहाढ्ढी करे कौण पहचान, ते बेपहिचाण कवण अखवाईआ। एसे कर के मैं अक्खरां विच्च पवा दिता घमसान, अक्खरां नाल अक्खर अक्खरां नाल अक्खर, त्रैगुण माया नाल अक्खरां वाले नाम, प्रभू ने दित्ते लड़ाईआ । की प्रभू नूं चंगा कहोगे कि शैतान, जिस ने गुर अवतार पैगम्बरां कोलों आपणे रसते बदला के सन्त सन्तां नाल दिते टकराईआ। शब्द गुरू कहे मैं आदि जुगादि सदा बलवान, बलधारी इक्क अखवाईआ। सदा रहे मेरी कमान, हुक्म इक्को इक्क वरताईआ। जो आया सो बण के ग़ुलाम, नफ़रां वाली कार कमाईआ। एसे कर के डण्डावत बन्दना सजदे करदे रहे सलाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

शब्द गुरू कहे अज्ज तों समझ लउ सतिजुग दी धारा, सति दा सति लैणा उपजाईआ । प्रगट इक्क इक्क दा सर्ब पसारा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जिस नूं कैंहदे कल कलकी अवतारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। ओस दा शब्द गुरू सिकदारा, हुक्मे अंदर आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतो तुसां जन्म नहीं लैणा दुबारा, मात गरभ अगन ना कोई तपाईआ । मिलणा मेल ओस निराकारा, जो निरँकार निरवैर सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणा रंग रंगाईआ।

शब्द गुरू कहे हुण मेरी बड़ी होणी परीख्या, विद्वानां लैणी अंगढ़ाईआ। जिन्हां कदी नेत्र नहीं दीख्या, ओन्हां अक्खीं मीट के कहणा मिल्या नूर अलाहीआ। कबाब खाणा भुंन के उत्ते सीख्या, कहण धर्म दी रीती असां अपणाईआ। सतिगुर शब्द ने सारयां तों पुच्छणा तुहाढ्ढा पिछला जन्म किस तरा बीत्तया, उह दिउ समझाईआ। ते की अगले साल दी होणी रीत्या, परदा दिउ खुल्हाईआ। केहड़ी वस्त तुहाढ्ढे काया खीस्सया, बाहर दिउ कढ्ढाईआ। ज़रा आपणा आत्मा तक्को बिना शीशया, बिना शम्हां तों आपणा नूर वेखो रुशनाईआ । सुणो अगम्मा कलमा अनोखा गीत्तया, जेहड़ा चार जुग दे शास्त्र ना सकण समझाईआ।

केहड़ा रंग मीठ्या, बिन रसना जिह्वा देणा समझाईआ। जेहड़े तप्पण वाले त्रैगुण पंज तत्त अंगीठ्या, सांतक सति ना कोई कराईआ। ओन्हां नूं मंगयां मिले ना भीक्खया, नाम भण्डारा ना कोई वरताईआ। सभ ने पौणा आपणा कीत्या, अग्गे हो ना कोई बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वडयाईआ।

शब्द गुरू कहे मेरा पैणा इक्क धमाका, सभ नूं देणा हिलाईआ। अनेकां साधां सन्तां ध्यान ला के मेरा खिच्चणा ख़ाका, नेत्र नज़र कुछ ना आईआ। मैं पुच्छ लैणा जगत दे गुरूओ तुहाढ्ढे पिछले नौ जन्म दा की साका, सच दिउ दृढ़ाईआ। जे तुहाढ्ढा थोड़ा थोड़ा थोड़ा खुल्लया ताका, जिस वेले सामुणे होणा ओसे वेले बन्द देणा कराईआ। हुण दस्सो केहड़ा काका चुकोगे ढाका, ते किस नूं बापू कहोगे किस दा मन्नोगे आखा, भेद दिउ खुल्हाईआ। एह कोई विद्या वालीआं नहीं बातां, वड्डिआई नहीं जाग के कट्टणीआं रातां, गुण नहीं बहुतीआं गौणीआं गाथां, अक्खरां विच्च सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

शब्द गुरू कहे मैं दीन दुनी दा बदल देणा यकीन, यके दीगरे बाअद खेल खलाईआ। कलिजुग नूं कहणा आफ़रीन, वाह वा तेरी वडयाईआ। जिस ने गुर अवतार पैगम्बरां दी भुलाई ताअलीम, कलिजुग जीव तुलबे आपणे लए बणाईआ। माया ममता दा दस्स के सीन, कूड़ी क्रिया विच्च फसाईआ। काम वासना कर अधीन, क्रोध विच्च हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

शब्द गुरू कहे जिस सिर उत्ते बध्धी लाल पग्ग, लेखा जन्म जगत जणाईआ। हरी तहमत रक्खी लक्क, नाता मुहम्मद नाल वडयाईआ। चिट्टा कमीज़ पहन के झट्ट, गोबिन्द लहणा रिहा वखाईआ। सदी चौधवीं रही सद्द, हुक्म इक्को इक्क अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ।

सदी चौधवीं कहे मैं वखौणी लाल धार, मेरी गोली नेड़े आईआ। गुर अवतार पैगम्बर होणा ख़बरदार, स्देसा इक्क अलाहीआ। धरनी धरत धवल तूं वी लै अधार, तैनूं दिआं जणाईआ। चारों कुण्ट होणा धूअन्धार, अन्ध अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

लाल बस्त्र कहण असां रहण देणा नहीं कोई सुहाग, सुहागवन्त ना कोई वडयाईआ। चार कुण्ट ना रहे चराग, अन्ध अन्धेरा कूड़ लोकाईआ। दुरमत मैल धोवे कोई ना दाग़, पत्तित पुनीत ना कोई कराईआ। कलिजुग जीव हँस होए काग, माणक मोती चोग ना कोई चुगाईआ। बिना भगतां तों अन्तर रिहा ना कोई वैराग, वैरी अंदरों ना बाहर कढ्ढाईआ। जगत समाज दा करे ना कोई त्याग, त्रैगुण लेखा ना कोई मुकाईआ। हक़ ख़ुदा मन्ने ना कोई वाहद, लाशरीक सीस ना कोई निवाईआ। जिस दा हुक्म होणा आइद, अहिदनामे

सभ दे पूर कराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ ।

लाल रंग कहे मैं लाल वेखणी भूमी, भूमिका दए दुहाईआ। इशारा मिलदा विच्च रूमी, रहमान दए वडयाईआ। खेल होणी ना अलूमी, सिआसत चले ना कोई चतुराईआ। परदा खोल्हे ना कोई नजूमी, हिसाब वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

लाल रंग कहे मैं कण्पड़ उत्ते चढ़या, तन वजूद सुहाईआ। मेरा अन्तर अन्तर लड़िआ, जगत विच्च दुहाईआ। मैं जींदा जग मरया, जीवत रूप ना कोई बणाईआ। मेरा पासा अन्तम हरया, जित्त संग ना कोई रखाईआ। मैनूं दुर्गा इक्क वरया, अष्टभुज गवाहीआ । मैं कलिजुग अन्तम सड़िआ, मेरा संग ना कोई रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक्क सुणाईआ।

लाल रंग कहे मेरी अगम्मी तस्वीर, हरि तसवर आप कराईआ। मैनूं संदेशा दिता कबीर, जुलाहा गिआ दृढ़ाईआ। जिस वेले दीन दुनी दी बदली ज़मीर, शरअ सच ना कोई समझाईआ। जूठ झूठ भरया ख़मीर, खाली होई लोकाईआ। बदले ना कोई तकदीर, तदबीर ना कोई दृढ़ाईआ। ओस वेले सभ दे नेत्रों डिग्गणा नीर, धीरज धीर ना कोई रखाईआ। किसे कम्म नहीं औणी शरअ शमशीर, खड़ग खण्डा ना कोई वडयाईआ । झगढ़ा पैणा शाह हकीर, ऊँच नीच करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

लाल रंग कहे मैं आया उत्ते फर्श , ख़ाकी वेख वखाईआ। मेरी मुहम्मद नाल शर्त, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। जिस वेले तेरा महिबूब आया परत, निरगुण नूर नूर अलाहीआ । कूड़ी क्रिया होणा ग़रक, शौह दरया दए डुबाईआ। दीन दुनी दी वेखे मरज़, हर हिरदा फोल फुलाईआ। मुहम्मद कहे मेरी इक्को ग़रज़, आसा दिआं जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेद अभेदा आप खुल्हाईआ।

मुहम्मद कहे सुण काले रंग, कलिजुग दिआं जणाईआ। लाल रूप लाल मेरे होवे संग, सगला संग बणाईआ। मेरा महिबूब सोहे अगम्म पलंघ, जिस दा पावा चूल ना कोई वखाईआ। कलमा नाम वज्जे मरदंग, दो जहानां दए सुणाईआ। कलिजुग मेटे अन्धेरा अन्ध, सदी चौधवीं डेरा ढाहीआ। साचा दस्से आपणा छन्द, आत्म परमात्म राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दवारा इक्क वखाईआ ।

मुहम्मद कहे सदी चौधवीं मेरा नाता, अन्त अख़ीर दृढ़ाईआ। खेले खेल पुरख बिधाता,

प्रभ ठाकर नूर अलाहीआ। जिस ने आपणा रंग रंगौणा साचा, लाल धरनी दए कराईआ। झगढ़ा मुकाए कंचन गढ़ काचा, पंकज पंज वेख वखाईआ। मेरी पूरी होवे आसा, आहिस्ता आहिस्ता वेख वखाईआ। खाली होवे भाण्डा कासा, वस्त नज़र कोई ना आईआ। मेरा ओस दे उत्ते भरवासा, जो भरम दए चुकाईआ। जिस ने अन्त अख़ीर करना तमाशा, परवरदिगार वेस वटाईआ। उस ने सभ दी बदल देणी भाषा, हुक्म इक्को इक्क उपजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर होण नहीं देणा नराशा, मनसा सभ दी वेख वखाईआ। इक्क ज़हूर करे प्रकाशा, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर कर्म इक्क कमाईआ।

पहली चेत कहे मेरा आया वक्त सुहञ्जणा, सोभावन्त सोभनीक। किरपा करे आदि निरँजणा, जिस दे विच्च हक़ तौफीक। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजना, आसा मनसा पूरी करे उम्मीद। नाम नेत्र पा के अंजना, निरगुण सरगुण खोल्हे दीद। चरन धूढ़ कराए मज़ना, भेव खुल्हाए गुफ़त शनीद। सभ दी सांझी कर के बन्दना, देवे अगम्म तरवीज़। धर्म दवार इक्को लँघणा, चार वरन होण नज़दीक। जिस सभ दा परदा कज्जणा, रहण देवे ना कोई शरीक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्त करे तस्दीक।

पहली चेत कहे प्रभ मित्र प्यारा एका, सभ नूं दिआं समझाईआ। दीन दुनी दी सांझी टेका, टिक्के मस्तक नाम रमाईआ। सभ दी बुध करे बिबेका, दुरमत मैल धवाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा करे लेखा, बचया रहण कोई ना पाईआ। इक्को प्रगट होवे शब्द दुलारा सुत्त अगम्मी बेटा, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। एथे ओथे दो जहानां खेवट खेटा, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। निरगुण सरगुण बण के आवे नेता, नर नरायण वेस वटाईआ। जन भगतो तुहाढ्ढा भुल्लया फेर नहीं चेता, जुग जन्म दे विछड़े लए मिलाईआ। तुसीं फिरदे भावें आपणे विच्च खेतां, किरसाणो तुहाढ्ढी किरस लई कढ्ढाईआ। देणी पए कोई ना भेटा, भजन बन्दगी वंड ना कोई वंडाईआ। सड़ना पए ना अगनी सेका, सीस सवाह ना कोई सुटाईआ। सिरफ पंज वारी कर लिआ करो चेता, जैकारा धुर दा आप लगाईआ। ते दर्शन वेखो आपणे नेता, निझ नेत्र करे रुशनाईआ। जोती जामा धार के भेखा, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म हो के करे अगम्मी हेता, हितकारी हो के आपणा मेल मिलाईआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋